बुंदेली भक्तामरजी

रचयिता

बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा० ब्र० संजय भैया, मुरैना

भक्तामर स्तोत्र

(मात्रिक सवैया/आल्हा)

भक्तामर के नत मुकुटों की, मणियों में जो भरें प्रकाश।
जग में पसरौ पाप अँधेरौ, जो कर देवें सत्यानाश।
भवसागर में डूबे जन खों, जो युगादि में भए जहाज।
नौंने से कर उने नमोऽस्तु, उनके गोड़े पर लूँ आज॥१॥

सबरे श्रुत की तत्त्व बुद्धि पा, जो खूबई बन गए हुसयार।
तीनंई जग के मन खों मोहें, ऐसे रच स्तोत्र हजार।
बड्डे बड्डे स्तोत्रों सें सुरपति सें स्तुत जिनराज।
उन आदिबाबा की स्तुति, मोखों भी करनें है आज॥२॥

जैंसें जल में परबे वारी, चन्दा मामा की परछांई।
तन्नक से मौंड़ा मौंड़ी बिन, कौन पकरबे मचलै भाई।
ऊँसइ मोय कछू नैं आवे, तौ भी सबरी लाज विसार।
सुर अर्चित जो पद उनके मैं, गुण गावे हो गओ तज्जार॥३॥

जैंसें सागर खों हातों सें, जे में हो मगरा घड़याल।
उत्तई पै तूफान उठैं तौ, पार करै को माई कौ लाल।
ऊँसइ चन्दा मामा जैंसे, स्वच्छ गुणों के सागर जौन।
उनके गुण गा सकें नें सुरगुरु, तौ गावे में समरथ कौन॥४॥

जैंसें अपने शिशु के लाने, लाड़ प्यार सैं राखनहार।
का हिरनी नैं लड़े शेर सैं, अपनी हिम्मत बिना विचार।
ऊँसइ हिम्मत बिना विचारें, भक्ति भाव सैं मैं मजबूर।
हे मुनीश! आपइ कौ संस्तव, करबे उद्यत भओ भरपूर॥५॥

जैंसें जब बसन्त में देखें, मधुर गुच्छ आमों कौ मौर।
तौ कोयल जौ बोलै ओ में, जौई एक कारन नैं और।
ऊँसइ मैं अज्ञानी मोरी, खिल्ली उड़ाएँ जानमकार।
तौ भी मोय तुमारी भक्ति, करै बोलवै खौं लाचार॥६॥

ज्यों जग में भौंरे सी करिया, अँधयारे की पसरी रात।
किरन ताक एकइ सूरज की, झट्ट कुजाने कहाँ विलात।
ऊँसइ दुनियाँ के मान्सों के, भव-भव के एकट्टे पाप।
नाथ! तुमारे संस्तव सैं बस, छिन में छय हों आपई आप॥७॥

मैं तन्नक सी बुद्धि बारौ, चालू करूँ बखान तुमाव।
ऐसों मानूं कै जौ संस्तव, पाकै तुमरौ संग प्रभाव।
ऊँसइ सबरौं कौ मन हर है, जैंसें साँचउं जल की बूँद।
कमलों के पत्तों पै गिर कैं, मोती सी चमकत है खूब॥८॥

जैंसें सूरज कौ का कैंनें, ओ की एकइ किरन निहार।
तालाबों के सबइ कमल तौ, हँसे खिलें लैं आँए बहार।
ऊँसइ बिना दोष कौ संस्तव, ओ की का कैंनें है बात।
कथा अकेली हे प्रभु तोरी, जग के सबरे पाप नशात॥९॥

ए में भौत बड़ों का अचरज, हे जगभूषण! हे जगनाथ!
कै नौंने-नौंने सद्गुण सैं, जो करकैं स्तुति गुण-गात।
वौ बन जाए तुमारे घांई, पर औ सैं का मतलब होय।
जो नैं बनावै अपने घांई, दे कैं अपनी दौलत मोय॥१०॥

जैंसें चन्दा जैंसौ उजरौ, मीठौ क्षार सिन्धु कौ नीर।
पी कैं को चखबौ चाहेगौ, क्षार सिन्धु कौ खारौ नीर।

ऊँसइ बिन पलकैं झपकायें, तुम तौ हौ दर्शन के लाक।
तुमें देख कैं और कितउँ तौ, टिकै लगै नैं मोरी आँख॥११॥

तीन लोक के वे अणु जिनकौ, ठण्डौ पर गऔ सबरौ राग।
और भौत खबसूरत हैं जो, जिनसैं तोय बनाऔ नाथ।
वे परमाणू ए धरती पै, उत्तइ हते विरागी रूप।
जबइं कोउ नैं तुमरे जैंसौ, खबसूरत चैतन्य सरूप॥१२॥

कितै तुमाई सुन्दर सी मुंइयां, सुरासुरों की नजर चुराए।
जीतै तीनंई जग की सबरी, भौतइ खबसूरत उपमांए।
और कितै बौ बिम्ब चाँद कौ, मैलौ-दागी सौ कहलाए।
जौन छेवले के पत्तों सौ, दिन में फीकौ सौ पर जाए॥१३॥

पूरे चंदा जैंसे उजरे, स्वच्छ गुणों के कला कलाप।
वे तुमाय गुण तीनंई जग खौं, लांक-लांक जा कैवें बात।
कै तीनंई जग के ईश्वर के, रहें आसरे बदलें चाल।
उनखौं इच्छा सें फिरवे सें, रोक सकै को माई कौ लाल॥१४॥

ए में का कैसों अचरज कै, सुर नटियों के तिरिया चरित्र।
तुमाय मन कौ तनक-मनक सौ, चिगा सकौ नैं सुन्दर चित्र।
प्रलयकाल की जौन हवा सैं, हल्कौ पर्वत तौ हिल जाए।
पै का ओ सैं मंदर गिरि कौ, शिखर तनक सौ भी हिल पाए॥१५॥

धुआँ तेल उर बिना बाति के, तुम तौ आतम जोत जलाए।
ओ सैं सबरे तीनंई जग खौं, परकट करकैं तुमंई दिखाए।
जौन पहारौं खौं झकझौरे, ऐंसी हवा बुझा नैं पाए।
सब संसार बताबै बारे, तुम तौ अद्भुत दिया कहाए॥१६॥

जो कब्भंऊ नैं डूबत होवे, जे खौं राहू ढक नैं पाए।
जे कौ करिया बदरों सैं तौ, कबऊं असर भी घट नैं पाए।
तीनंई जग खौं सहज दिखावे, संसारी सूरज सैं तेज।
हे मुनीन्द्र! तुम तौ ऐंसे हौ, तुमें नमोऽस्तु होवे सिर टेक॥१७॥

सदा उदित जो रैबे बारौ, मोह अँधेरौ जे सैं जात।
राहू मौं कौ कौर बनै नैं, बदरों सें जो छिप नैं पात।
बेंजइं तेज चमकबे बारौ, जो सब जग कौं हर कें अंध।
प्रभु! अपूरब चंदामंडल, सौ सोहे तुमाव मौं चंद॥१८॥

जैंसें सोहें फसलें पक कैं, जग में कटवे खों हो जात।
तौ जल के कारे बदरों कौ, कऔ तौ कारज का रै जात।
ऊँसइ तुमांइ चंदा सी मुंइआ, करै अंध कौ काम तमाम।
तौ रातों में चंदा सैं का, दिन में सूरज सैं का काम॥१९॥

जैंसें जो असली मणियों की,चमक-धमक की फैले जोत।
का ऊँसी कब्भंउ काँचों की, चकाचौंध किरनों में होत।
ऊँसइ तुममें ज्ञान भरौ जो, ओ की बात नैं सूझै मोय।
ऊँसौ ज्ञान अन्य देवों में, का सोहै! जो झूठौ होय॥२०॥

मोय लगत है ऐंसों कै प्रभु, जग के सब प्रभु अच्छे होंय।
लेकिन जब सैं तोखों देखौ, साँचउं कोऊ जमे नैं मोय।
आपई में संतोष मिलत है, और लाभ का तोसैं होय।
ए धरती पै और कोउ तौ, रिझा सकै नैं कब्भंऊ मोय॥२१॥

सौ-सौ लुगाइएँ सौ-सौ मौंड़ा, जनत रेत हैं सौ-सौ ठौर।
पर तुम सौ जो मौंड़ा जन्में, वा मताई है नंइयां और।

जैंसें तरइयों की टिमकारें, सबई दिशाओं खौं टिमकांय।
लेकिन पूरब दिशा अकेली, परतापी सूरज जन पाय॥२२॥

हे मुनीन्द्र! तुमखों मुनियों नैं, सूरज के रँग को बतलाऔ।
परम पुरुष जैंसे तुम निर्मल, मोह अँधेरौ तुंमई नशाऔ।
मौत जीत कें मृत्युंजय तौ, बन जावें पाकर कैं तोय।
ए के सिवा मोक्ष पावे को, भलों नैं दूजौ रस्ता होय॥२३॥

सज्जन कहें आप खों अव्यय, विभू असंख्य आद्य अचिन्त्य।
विदित योग योगीश्वर ईश्वर, अनंगकेतू अमल अनंत।
एक अनेक ज्ञान स्वरूप भी, और लेत ब्रह्मादि के नाम।
मोय कछू नें सूझै मैं तौ, करकें नमोऽस्तु करूँ प्रणाम॥२४॥

विद्वानों सें पूजित हौ सो, आपई रए बुद्ध भगवान।
तीनंई जग में शांति करौ सो, आपई हौ शंकर भगवान।
मोक्षमार्ग की विधि कैबें से, आपई हौ ब्रह्मा भगवान।
प्रभु! आपई नारायण हौ सो, मैं तौ खूबई करूँ प्रणाम॥२५॥

त्रय जग कौ दुख हरबे बारे, तोखों खूब नमोऽस्तु होय।
धरती के उजरे आभूषण, तोखों खूब नमोऽस्तु होय।
हे! तीनंइ जग के परमेश्वर, तोखों खूब नमोऽस्तु होय।
हे जिन! भवसागर के शोषक, तोखों खूब नमोऽस्तु होय॥२६॥

हे मुनीश! जब सबइ गुणों नें, कितउँ कोनिया लौ नें पाई।
तौ तुमाय लिंगा सब दौरे, तुमखों पाके शांति पाई।
और आसरे भौतइ पाकें, दोष घमण्डी सबरे होय।
वे सपने में दिखे नैं तुममें, ए में अचरज कैंसो मोय॥२७॥

ऊँचे अशोक तरु के नेंचें, हे प्रभु! तुमरौ सुन्दर रूप।
ऐंसें सोहै जैंसें सांचउं, जे की फैंलें किरनें खूब।
जौन अंधेरौ सबइ मिटाबै, बदरों के बाजू में होय।
ऐंसे सूरज बिम्ब सरीखे, लगौ सुहाने तुमतौ मोय॥२८॥

जड़े खचाखच रत्न जौन में, जो छोड़ें किरनों की छाप।
ओ सिंहासन पै सोने से, सुन्दर ऐंसे चमको आप।
जैंसे ऊँचे गिरी शिखर पै, नभ में अपनी किरन बिखेर।
सूरज बिम्ब सरीखे सोहौ, मोरी तरफ तनक तौ हेर॥२९॥

स्वच्छ कुन्द के फूलों जैंसे, भले ढुरत चँवरों के बीच।
तुमाई तौ सोने सी काया, चमकै जी पै दुनियाँ रीझ।
ऐंसें सोहें जैंसे ऊँचे, मेरु के तट सोने घांई।
उंतई बैत झरनों सें ऊँगै, चम-चम चंदा की परछांई॥३०॥

चंदा जैंसे खूबई सोहें, रोकें सूरज कौ संताप।
मोती की झालर बारे जे, लटकें ऊपर आपई आप।
तीनंई छतर बताबें जौ कि, तीनंई जग के तुम सम्राट।
मोखों दै दो अपनी छईयां, मैं तौ ताकूं तोरी बाट॥३१॥

सबई दिशाओं में जो गूंजै, हो-हो कैं खूबई गंभीर।
तीनंई जग खौं धर्म समागम, कौ वैभव दैबे में वीर।
जैन धर्म के स्वामी जी के, यश की वाँचै जय-जयकार
बजें ढोल रमतूला नभ में, जोई दुन्दुभी प्रातिहार्य॥३२॥

महकदार पानी की बूंदें, संगै-संगै मन्द बयार।
सुन्दर पारिजात संतानक, फूल नमेरु हैं मन्दार।

जे सबरे मिल जब बरसें तौ, सांचउं ऐंसौ लागे मोय।
जैंसें तोरे वचनामृत की, नभ से झर-झर बरसा होय॥३३॥

तीनंई जग में जो चमकत हैं, उन सबरों की चमक लजाय।
सदा ऊगबे बारे लाखों, सूरज जैसों चमकत जाय॥
चन्दा जैसों सुन्दर-सुन्दर, भामण्डल है भौत विशाल।
जे की चमक रात खौं जीते, मोय बना दै चेतन लाल॥३४॥

स्वर्ग मोक्ष जाबे बारों खौं, गैल ढूंढ़बे करै सहाय।
तीनंई जग के जीव जन्तु खौं, साँचौ धर्म तत्त्व समझाय।
साँचौ हितकौ अर्थ बताबै, सब भाषा में घुल मिल जाए।
ऐंसी तोरी दिव्य धुनी है, तन मन के सब रोग नशाए॥३५॥

नए-नए से खिले खुले से, कुन्दन जैंसे कमल समूह।
जिनके नौं की किरनें चमकें, सबई ओर सें खूबइ खूब।
ऐंसे चरन तुमारे सुन्दर, जितै धरौ तुम हे भगवान।
उतइं देव कमलों खौं रच कैं, धरती कर दें रतन समान॥३६॥

जैंसें सूरज जोती सैं हो, अँधयारे कौ सत्यानाश।
टिम-टिम करते और ग्रहों कौ, का ऊँसौ हो सके प्रकाश।
ऊंसई भयी विभूती तोरी, लगी सभा जब तत्त्व बताए।
का ऊंसी है और कोउ की, तुम सौ कोउ नजर नैं आए॥३७॥

गण्डस्थल सैं मद झर रऔ है, जे पै भौंरे भी मंडराएँ।
जे सें ओ कौ क्रोध बढ़ै सो, इतै-उतै फिरकैं पगलाएँ।
खूब ऊधमी सौ ऐरावत-हाथी सामें सैं आ जाए।
ओ खों देख डरै नैं वौ तौ, जो तोरी छइयाँ पा जाए॥३८॥

फाड़-फूड़ कैं गण्डस्थल खों, हाथी के सिर सैं बगराए।
खून-मांस सैं लतपथ उजरे, मुक्ताओं सैं भू चमकाए।
खूब छलांगें मार-मार कें, करैं वार पंजों में डार।
ऐंसौ शेर नैं मारे ओखों, जो पाए प्रभु चरन-पहार॥३९॥

भौत भयंकर प्रलयकाल की, बेहर सें जो भई विकराल।
जे के चिट-चिट तिलगा उचटें, खूबई धधके लालई लाल।
दुनियां खौं खाबे सी दौरै, वन-आगी सामें सैं आए।
तौ भी तोरे नाम गुणों के, कीर्तन जल सैं सब बुझ जाए॥४०॥

मतवारी कोयल सी करिया, जे की आँखें लालई लाल।
करकैं क्रोध भऔ उद्दण्डी, तबई उठाकें फन विकराल।
ऐंसे सांप खों दोई पांव से, हो कें निडर लांक वो जाए।
जे के दिल में तुमाय नाम की, दवा नाग दमनी आ जाए॥४१॥

जितै खूब घुड़वा उचकत हों, होय हाथियों की चिंघार।
उतईं भयंकर शत्तुर सेना, कर रई होवै खूब दहार।
युद्धों में तोरे कीर्तन सें, शत्रु कौ भऔ ऐंसौ काम।
जैंसें उगत सूर्य की किरनें, करें अंध कौ काम तमाम॥४२॥

भालों की नोकों से फाड़े, हथियों कौ बै रऔ है खून।
ओई धार खों पार करन खों, जोद्धाओं खों चढ़ौ जुनून।
ऐंसे महाभयंकर रन में, शत्रु पै जय मुश्कल होय।
तो तोरौ पा चरन कमल वन, शत्रु पै जय पक्की होय॥४३॥

जितै भयंकर मगरा होवें, और मछरियों की टकरार।
संगै-संगै बडवानल सैं, भऔ समुन्दर लहरोंदार।

ओ में फँसौ जहाज होए तौ, यात्री तौ खूबई घबरांए।
लेकिन तोरौ सुमरन करकैं, होकें निडर पार हो जांए॥४४॥

भौत भयंकर भऔ जलोदर, जे सें झुक गई हो करहाई।
जे सें भई दयनीय दशा सो, जीवे की सब आश गंमाई।
असाध्य रोगी भी तौ तोरे, चरनामृत की धूर लगांए।
कामदेव सें खूबई जादा, स्वस्थ मस्त नौनें हो जांए॥४५॥

गोड़े सें लै कें घुटकी लौं, बड्डी कसी साँकरें होंए।
जे की नौकों सें तन छिल गऔ, खूबई छिल गईं जांगें होंए।
ऐंसे मान्स निरंतर सुमरें, तोरे नाम मंत्र कौ जाप।
तौ झट्टईं बंधन के भय सैं, मुक्त होंए वे आपई आप॥४६॥

हे बाबा! तोरौ जौ स्तव, ज्ञानी जो भी पढ़ै पढ़ाए।
वौ तौ शेर नशीले हांती, साँप युद्ध सैं नैं घबराय।
ओ कौ सागर और जलोदर बन्धन कौ डर ऐंसो जाए।
जैंसें डर खुद डरा-डरा कैं, झट्टइँ गदबद दै भग जाए॥४७॥

हे जिनेन्द्र! जा मैंने तोरी, भक्ति गुणौ कौ धागौ डार।
माला गूंथी रंग बिरंगी, अक्षर वारी फूलोंदार।
तोरी जा स्तुति की माला, धरै गरे में जो दिन रात।
'मानतुंग' के घांई बनैं वे, मोच्छ लच्छमी झट्टइँ पात॥४८॥

===